International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 61-62

संस्कृत साहित्य में मानव–स्वभाव–सम्बन्धी सूक्तियों का अध्ययन

नवीन
शोधछात्रा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, गांव खानपुरा कलां, जिला झज्जर, हरयाणा, भारत

1. प्रस्तावना

मानव–जीवन से संबंध रखने के कारण[1] सूक्तियों में मानव–जीवन के सभी पहलुओं का चित्रा हुआ है। फिर मानव का स्वभाव सूक्तियों का विषय बनने से कैसे रह सकता था? मानव स्वभाव से तात्पर्य है– मानव के मौलिक या सहज गुण, उसकी प्रकृति या प्राकृतिक संघटना, उसका नैसर्गिक शील[2]। किसी विशेष परिस्थिति में कोई व्यक्ति क्या प्रतिक्रिया करेगा यह उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं से निश्चित होता है। अतः मानव का व्यवहार मुख्यतः व्यक्ति–सापेक्ष है। फिर भी सामान्य मानव की प्रतिक्रियाओं में कुछ सीमा तक एकरूपता होती है मनोविज्ञान में भी इसीलिए सामान्य मन का अध्ययन होता है और उससे भिन्न व्यवहार का पृथक से निरूपण किया जाता है।

कवि भी मानव स्वभाव को समझने का यत्न करता है। काव्य में वह विविध पात्रों के व्यवहार से भिन्न–भिन्न प्रकार के मानवमन की झलक दिखाता है। परन्तु अनेक बार कवि मानव स्वभाव की किसी विशिष्टता पर सूक्ति रूप में टिप्पणी भी कर जाता है। ऐसी मानव स्वभाव सम्बन्धी सूक्तियों में अंकित मानव मन और उसके स्वभाव को इस शोध पत्र में दर्शाया गया है।

सूक्तियों में मानव मन और स्वभाव की जिन क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं, शक्तियों, विशिष्टताओं और उन पर पड़ने वाले प्रभावों का संकेत निहित है उन्हे निम्न रूप देकर प्रस्तुत किया गया हैः–

1. मानव मन को प्रभावित करने वाली अवस्थाएं 2. मानव मन की इच्छाएं और आवश्यकताएं 3. मानव मन की शक्तियां 4. मानव मन की वृत्तियां 5. मानव स्वभाव के कुछ विशिष्ट पहलु।
2. मानव मन को प्रभावित करने वाली अवस्थाएं

i. परिभव (तिरस्कार, पराजय)– जब मानव को परिभव सहना पड़ता है तब उसे एक विशेष प्रकार की क्षुब्धता की अनुभूति होती है, जिसकी प्रतिक्रिया वह प्रत्येक परिस्थिति के अनुरूप तथा अपने स्वभावानुसार ही करता है। ऐसी एक प्रतिक्रिया का उल्लेख भास करते है– जनयति खलु रोषं प्रश्रयो भिद्यमानः ''ठुकराया हुआ समादर क्रोध उत्पन्न करता है।

कभी–कभी तिरस्कार से उत्कट क्षोभ का जन्म होता है और फलतः प्राणी अपने सामर्थ्य को पहचानने का यत्न करने लगता है। कालिदास मानते है

ज्वलति चलितेनधनोऽग्निर्, 'विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।'
प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते जन्तुः'।।[4]

''ईंधन को हिलाने से आग जल उठती है, तिरस्कृत सांप फन फैलाता है। प्राय क्षोभ से प्राणी अपनी महता को पा लेता है और इस प्रकार अपनी शक्ति का पूर्ण प्रयोग कर दिखाता है।''

ii. प्रार्थना–याचना करते हुए जो कष्ट या ग्लानि होती है उसे कोई वाचक ही समझ सकता है। भास के अनुसार– निर्वेदप्रत्यर्थिनी खलु प्रार्थना[5] ''प्रार्थना वास्तव में दुःख को उत्पन्न करने वाली है।

iii. स्नेह प्रदर्शन, प्रशंसा और तिरस्कार– ये तीनों व्यवहार जिसके प्रति किये जाते है उसके मन पर प्रसादक प्रभाव डालते है। पारस्परिक स्नेह प्रदर्शन का व्यवहार पारस्परिक कटुता को भूलाने का एक[6] सरल उपाय है। भास बताते है– रुक्षस्य वचसः परिष्वङग् शमीक्रिया– गले मिलना रूखे वचन की शान्ति करने वाला है।

iv. दोष और उसकी अनुभूति– दोषी मनुष्य निश्शंक नही रह सकता। भास और शूद्रक स्वीकारते है– स्वैदोर्षभवति हि शङ्कितो मनुष्य[7] अपने दोषो से मनुष्य शंकायुक्त रहता है। दोषानुभूति से पश्चाताप और उसी से दुष्कर्म की निवृत्ति होती है। वाण ने कहा है– सर्व एव हि अविनयप्रवृत्तोऽनुतापाद्विना न निवर्त्तते–[8] पश्चाताप के बिना कोई भी दुष्टता में प्रवृत्त व्यक्ति नही बदलता।

2. मानव मन की इच्छाएं और आवश्यकताएं

I. मनोरथों का प्रसार– कोई भी मानव इच्छाओं से रहित नही हो सकता। बड़े से बड़ा वैरागी या सन्त भी कुछ प्राप्ति की इच्छा से ही कार्य में प्रवृत्त होता है[9] कालिदास ने कहा है– मनोरथा नाम तट प्रपाताः[10]।

II. कल्याण–भावना प्रत्येक व्यक्ति उत्तरोत्तर उन्नत्ति की और बढ़ना चाहता है। इसके मूल में अपने कल्याण की भावना रहती है। जो जिससे अपना कल्याण समझता है उसी को पाना चाहता है। गुणं गुण पश्यति यश्च यत्र स वार्यमाणोऽपि ततः प्रयाति[11] जो जहाँ जिस गुण में गुण देखता है वहाँ रोके जाने पर भी जाता है इस प्रकार सभी ओर से कल्याण और मंगल चाहने वाले व्यक्ति के लिए कालिदास का सन्देश है– अनिर्वेदप्राप्याणि श्रेयांसि[12]

III. हर व्यक्ति अपना अधिक से अधिक कल्याण चाहता है। इसलिए माद्य को कहना पड़ा– श्रेयसि केन तृप्यते–[13]''कल्याण भाव में किसे तृप्ति होती है?''

IV. (ग) जीवितेच्छा– बाण बताते है कि – नास्ति जीवितादान्पद् अभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्–[14] ''हर प्राणी को अपने जीवन से अधिक इस संसार में और कुछ प्रिय नही है।'' जी ने की इच्छा ही कई बार मनुष्य को दुष्ट बना देती है और अत्यधिक कष्ट की अवस्था आने पर भी उसकी प्रवृत्ति जीवन–निरपेक्ष नही होती।[15]

3. मानव जीवन की शक्तियां

I. संकल्प– मानव मन अनेक शक्तियों से सम्पन्न बताया गया है। उन शक्तियों का प्रसार मानव के स्वभाव में और प्रभाव मानव सम्बन्धों पर परिलक्षित होता है। सोचने–विचारने सं विकल्प करने और प्रतिक्रिया की प्ररेणा देने में मन का बहुत बड़ा हाथ रहता है। भास बताते है प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते विशेष द्वेष या मान–भाव संकल्प से ही उत्पन्न होता है।

II. भविष्य ज्ञान– कालिदास मानते है कि मन शक्ति से भविष्य का ज्ञान भी हो सकता है– आगामि सुखं (वा) दुखं वा हृदय समवस्था कथयति[17] – आने वाले सुख या दुख को हृदय की अवस्था कह देती है।

III. अपने पराये का ज्ञान–जिनहे हमने पहले कभी नही देखा ऐसे व्यक्तियों को देखकर कई बार हम प्रसन्न हो जाते है और कई बार अप्रसन्न। कुछ में हम को अपनत्व प्रतीत होता है और कुछ में परत्व। भारवि ने दिखाया कि मुनिवेशधारी इन्द्र के प्रति उसके पुत्र अर्जुन को अकारण स्नेह होने लगता है। बात यह है कि अविज्ञातेऽपि बन्धौ हि बलात् मनः[18] बन्धु के अपरिचित होने पर भी मन हठात् प्रसन्न हो जाता है। उन्ही के शब्दों में – विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्मेव हितेषिणं रिपुं वा[19] स्वच्छ या मलिन होता हुआ हृदय हितेषी या रिपु का संकेत दे ही जाता है।

4. मानव–मन की वृत्तियां

I. गतिवौचित्र्य और रूचिभिन्नता– मानवमन एक पहेली है। वह किस प्रकार और क्या–क्या गति करता है यह जान पाना कठिन है। कविजन इसकी दुरूहता बताते है– गतयो विविधा हि चेतसं बहुगुहयानि महाकुलानि च[20]– ''चित्त की गतियां विविध हैं, जिसमें बहुत कुछ गोपनीय है और व्याकुलताएं है।'' इसी कारण रूचि संसार में वैविध्य दृष्टिगत होता है– भिन्नरूचिहिं लोकः।

II. चंचलता– मन की एक स्वभाविक वृत्ति है उसकी चंचलता। अश्वघोष ने चंचल मानसिक प्रवृत्तियों की उपमा वर्षाजल से प्रताडित और इतस्ततः डोलायमानलता के अंगभूत पल्लवों से की है– लता इवाम्भोधरवृष्टि ताडिताः प्रवृत्तयः सर्वगता हि चंचलताः[21]– हर्ष इसी को सूत्ररूप में कहते है– मनश्चलं प्रकृत्मैव[22] मन प्रकृति से ही चंचल है।

III. विकार– विकारोत्पत्ति हर प्रकार के मनुष्य में हो सकती है और इसे छिपाना सरल नहीं। अपने मन के विरूद्ध श्री कृष्ण का आदर देखकर शिशुपाल क्रोध से भर गया। इस पर माध की टिप्पणी है– याति विकृतिमपि संवृतिमत् किमु भन्निसर्गनिरवग्रहं मनः[23] – भावगोपन में कुशल मन भी विकार को प्राप्त हो जाता है, स्वभाव से असंयमी मन का तो क्या कहना

5. मानव मन के कुछ विशिष्ट पहलु

I. शोक–मानवमन अनेक प्रसंगों में शोकाकुल हो उठता है। तब वह कैसा अनुभव करता है। यह सब सूक्तियों में दर्शाया गया है। भास के अनुसार तीव्र शोक में ''नाना फलाः शोकशरभिघाताः तत्रैव तत्रैव पुनः पतन्ति[24]'' अनेक फलकों से युक्त शोकरूपी बाण उसी स्थान पर बार–बार गिरते है।'' शोक जब गहरा होता है तब टीस रह–रह कर उठा करती है। भवभूति ने बताया कि–कर्तव्यानि खलु दुखितैर्दुःख निर्वापणानि– दुःखियों को अपना दुःख बहा देना चाहिए।

II. क्रोध–क्रोधावस्था में मनुष्य विनाशकारी दृष्टि अपना लेता है। अतः कालिदास ने क्रोध की तुलना में अग्नि को रखा है– 'कोऽन्यो हुतवहाद् दुग्धं प्रभवति?[25] ''आग के अतिरिक्त और कौन जला सकता है। क्रोध के दुष्परिणामों को देखते हुए इसे 'अरिषड्वर्ग' में रखा गया है।

III. श्रम आशंका– निश्चयहीनता की स्थिति में मन पर भ्रम अधिकार जमा लेता है जिसका प्रभाव बुद्धि पर पड़ता है। माध के अनुसार भ्रान्तिभाजि भवति क्व विवेकः[26] '' भ्रम से युक्त व्यक्ति में विवेक कहां रहता है।'' वह तो किं कर्तव्य विमूठ हो जाता है।

निष्कर्ष

संस्कृत काव्य के सभी कवियों ने मानव स्वभाव को ध्यान में रखकर कुछ संक्तियां कहीं है, जिनमें परिलक्षित मानव–मन सार्वकालिक और सार्वदेशिक है। उन्होंने जिन परिस्थितियों का मानव मन पर प्रभाव दिखाया है, उसकी जो इच्छाएं और वृत्तिया बताई है, उनसे सामान्यतः किसी का विरोध नही हो सकता है।

ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत सूक्तियों लोकोक्तियों का मनौवैज्ञानिका विश्लेषण, परिच्छेद 1, अनुच्छेद 4
2. स्वभावः– 2014 essential or inherent property natural consitution innate... desporition nature ...” V.S Apte, P.630
3. चारूदत, 1.14
4. शाकुन्तलम् 6.31
5. ''वुद्धया वा जितमपरेण काममा विष्कुर्वीत स्वगुणमपत्रपः क एव?'' शिशुपाल 8.7
6. पंचतन्त्रम्, 1.41
7. चाक० 4.6 मृच्छकटिकम् 4.1
8. कादम्बरी पृ० 707
9. तुलनार्थ– ''न कारणं बिना मन्दोऽपि प्रवर्त्तते।''
10. शाकु०, 6.10
11. शाकु० , 6.10
12. सौन्दरनन्द, 16.75
13. विक्रमोर्वशीय, 4.29– राज अर्थ के लिए देखिए..... faint heart will never be with good fortune, karnik & Desai, P. 113
14. शिशु, 1.19
15. काद० पृ०, 73, तात के मरने पर भी पानी पीने के लिए जाता हुआ शुक–शिशु
16. काद०, अतिकष्टास्ववस्थास्वपि– – – रपलीकरोति जीवित तृष्णा।
17. स्वप्नवासवदता, 1.7
18. मालतिमाधव, 5.9– द्वितीया
19. किरातार्जुनीयम्, 11.8
20. किरात० 13.6
21. सौन्दरनन्द, 8.6
22. रत्नावली, 3.2
23. शिशु०, 15.11
24. प्रतिमानाटक 5.4 राम सीता से, पिता के मरण का दुःख प्रकट करते हुए।
25. शाकु०, 4.1 सं० 19 अनसूया, मुनि दुर्वासा को शाप दे जाता देखकर
26. शिशु० 10.5